❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

द्युमन्तं शुष्ममाभर।
सामवेद 1325

हे शक्ति दायक प्रभो ! हमें शुभ शक्ति दो।

O the Bestower of strength! Bistwo on us the strength that will bring glory.

वर्ष 43, अंक 4 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 18 नवम्बर, 2019 से रविवार 24 नवम्बर, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 196 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली पब्लिक स्कूल रोहतक (हरि०) में 1000 कुण्डीय एकरूपीय यज्ञ सम्पन्न

वैदिक संस्कारों को अपनाने से ही मिलेगी युवाओं को सफलता - पद्मभूषण महाशय धर्मपाल

यज्ञ की ज्योति जलती रहे के उद्घोष को घर-घर तक पहुंचाने का लें संकल्प - मा. रामपाल आर्य

13 नवम्बर 2019 जीन्द रोड, रोहतक हरियाणा। यज्ञ संसार का सर्वश्रेष्ठ कर्म है, वर्तमान में बढ़ रहे वायु प्रदूषण, वैचारिक प्रदूषण, जल प्रदूषण इत्यादि प्रदूषणों की निवृत्ति के लिए यज्ञ ही एक परम साधन है। इसी भावना और कामना को मन में रखते हुए वैदिक जन कल्याण सभा के तत्त्वावधान में पूज्य स्वामी विवेकानंद परिव्राजक जी के ब्रह्मत्व में स्वर्गीय आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य जी की द्वितीय पुण्यतिथि के अवसर पर 13 नवम्बर 2019 को दिल्ली पब्लिक स्कूल, जीन्द रोड, रोहतक हरियाणा में सायं 3 बजे से 6 बजे तक 1000 कुण्डीय यज्ञ का विशाल आयोजन किया गया। इस अवसर पर पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी एवं सीकर (राज0) के सांसद स्वामी सुमेधानंद सरस्वती जी ने ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा के प्रधान श्री रामपाल आर्य जी, स्वामी यज्ञ देव जी, श्री वल्लभ मुनि जी, ब्रह्मचारी अरुण जी, स्वामी शांतानंद जी, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के महामन्त्री श्री सतीश चड्ढा, मन्त्री श्री योगेश आर्य एवं व्यवस्था सचिव श्री सुरिन्द्र चौधरी आदि महानुभाव उपस्थित थे।

कार्यक्रम के शुभारंभ में

दिल्ली पब्लिक स्कूल रोहतक के बच्चों द्वारा सामूहिक गीत की प्रस्तुति से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ और वहीं श्री वल्लभ मुनि जी ने भी एक मधुर स्वागत गीत प्रस्तुत किया। यज्ञ का महत्त्व बताते हुए स्वामी यज्ञदेव जी ने कहा कि शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के लिए हर व्यक्ति को यज्ञ अवश्य करना चाहिए। यज्ञ संसार का सर्वश्रेष्ठ कर्म है। इस अवसर पर आचार्य सत्यजीत जी ने आचार्य ज्ञानेश्वर जी के तपस्वी जीवन से उपस्थित जनसमुदाय को अवगत कराया। ब्रह्मचारी अरुण जी ने आचार्य ज्ञानेश्वर जी के प्रेरक जीवन को भावपूर्ण शब्दों में प्रस्तुत किया। श्री विनय आर्य जी ने आर्य समाज की मान्यताओं, सिद्धांतों

घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ के विस्तार का विहंगम दृश्य :
महाशय धर्मपाल वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प के सहयोग से डी.पी.एस. जींद रोड, रोहतक के प्रांगण में हजारों यजमानों ने किया पर्यावरण शुद्धि यज्ञ

"होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से, जल्दी प्रसन्न होते है भगवान यज्ञ से"

- शेष पृष्ठ 4 पर

दिल्ली एनसीआर में बढ़ते वायु प्रदूषण पर विशेष चिकित्सीय राय

स्वास्थ्य रक्षा के लिए प्रदूषित हवा से बचाव बेहद जरूरी

आर्य सन्देश के पिछले अंक में हमने वायु प्रदूषण के कारण और निवारण को आधार बनाकर यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डाला था। इस विषय पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने सुदर्शन चैनल पर आयोजित एक डिबेट में भी यह सिद्ध करने का सार्थक प्रयास किया था कि यज्ञ के द्वारा बढ़ते हुए प्रदूषण को कैसे कम किया जा सकता है अथवा समाप्त किया जा सकता है। वायु प्रदूषण बेहद ही खतरनाक और भयंकर बीमारियों का कारण सिद्ध हो रहा है। इस विषय पर लोगों को जागरूक करना अत्यंत आवश्यक है। इस क्रम में विश्व प्रसिद्ध डॉ. नरेश त्रहेन जी का आलेख यहां प्रस्तुत किया जा रहा है जिसमें बताया गया है कि प्रदूषित हवा से बचना कितना जरूरी है? - सम्पादक

सर्दियां आते ही हवा में जब नमी आने लगती है, तो वह ऊपर उठने के बजाय बैठने लगती है। अब अगर उस हवा में धूल के कण होंगे, तो जाहिर है कि वे भी हमारे आसपास ही होंगे। यही स्थिति स्मॉग पैदा कर देती है और फिर वातावरण पूरी तरह से प्रदूषित हो जाता है। दूर-दूर तक कुछ साफ दिखायी नहीं देता, क्योंकि हवा में धूल और अन्य कई प्रकार के कण अवरोध उत्पन्न करते हैं। ठंडी हवा में धूल के कण जमा होकर वातावरण को गैस चैंबर बना देते हैं। जब धूप निकलती है, तब हवा कुछ खुश्क होती है और हवा के खुश्क होते ही हवा ऊपर की ओर चली जाती है और वातावरण साफ हो जाता है, लेकिन ऐसा तभी होगा, जब सूरज की किरणें जमीन पर पड़ेंगी। अक्सर धुंध की परत इतनी ज्यादा हो जाती है कि सूरज की किरणें भी लाचार हो जाती हैं। इसलिए सर्दियों में वायु प्रदूषण ज्यादा खतरनाक होता है, जबकि यह प्रदूषण तो गर्मियों में भी होता है, लेकिन हवा में गति और खुश्की होने से नजर कम ही आता है। हवा में खतरनाक प्रदूषण बढ़ने के लिए जिम्मेदार कारकों के बारे में मैं नहीं बता पाऊंगा। आज पूरे उत्तर भारत में हवा में प्रदूषण फैला हुआ है और उसमें धूल के कण बिखरे हुए हैं। ये कण बहुत खतरनाक हैं, जो सांस के रास्ते सीधे फेफड़े तक पहुंचते हैं। ऐसे में अगर फेफड़े जरा भी

- शेष पृष्ठ 6 पर

वेद-स्वाध्याय

सनातन और नवीन का अद्भुत समन्वय

सनातनमेनमाहुरुताद्य स्यात् पुनर्णवः।
अहोरात्रे प्र जायेते अन्यो अन्यस्य रूपयोः।। - अथर्व० 10/8/23
ऋषिः कुत्सः।। देवता - आत्मा।। छन्दः अनुष्टुप्।।

शब्दार्थ - **एनम्** = इस देव को **सनातनम्** = सनातन, अनादिकालीन **आहुः** = कहते हैं, **उत** = और तो भी यह **अद्य** = आज, प्रतिदिन **पुनः नवः** = फिर-फिर नया **स्यात्** = होता है। देखो, **अन्यः** = एक **अन्यस्य** = दूसरे के **रूपयोः** = रूपों में, समान रूपों में ही **अहोरात्रे** = ये दिन-रात **प्रजायेते** = सदा पैदा होते रहते हैं।

विनय - विरले ही मनुष्य होते हैं जिन्हें कि आत्मा, परमात्मा, ईश्वर, ब्रह्म आदि की चर्चा रोज-रोज रुचती है, आनन्ददायी लगती है। हम साधारण लोगों को तो यह चर्चा पुरानी, जीर्ण, घिसी हुई, बासी और नीरस ही लगती है। जब हमें रोज-रोज समाज-मन्दिर की वेदकथा में जाने को, नैत्यिक प्रार्थना में उपस्थित होने को या दैनिक भजन-कीर्तिन में सम्मिलित होने को कहा जाता है तो हम प्रायः कहते हैं "हम वहाँ जाकर क्या करेंगे? वहाँ तो रोज वही एकरस मामला चलता है, वहाँ कुछ नई बात तो मिलती नहीं।" वास्तव में यह सच है कि जिसमें कुछ नई चीज न मिलती हो, कुछ नवीनता न होती हो, वह वस्तु हमें कभी रसदायी नहीं हो सकती, आनन्ददायी नहीं हो सकती। जिन लोगों को प्रतिदिन ईश्वर-भजन करने में आनन्द आता है उन्हें इसलिए आनन्द आता है, क्योंकि सचमुच उन भक्तों के लिए वे प्रभु नित्य नये होते रहते हैं, नित्य नया जीवन देते हुए मिलते हैं, हमें ईश्वर का ध्यान करने में तभी रुचि होती है जब उसका ध्यान हमें नित्य नया आनन्द देता है। सच्चा जप करनेवाला वही है जिसे प्रभु का महापुराना नाम लेते हुए और उसे बार-बार लेते हुए भी प्रत्येक बार में प्रभुनाम के उच्चारण से नया-नया उत्साह, नया-नया ज्ञान, नई-नई भक्ति की उमंग और नया-नया प्रेम का रस मिलता है। अरे मेरे भाइयो! ये दिन-रात कितने पुराने हैं, उन्हें तुम भी अपने जन्मदिन से लेकर आज तक बिलकुल उसी एक रूप में रोज-रोज आते हुए देख रहे हो, फिर भी ये तुम्हें पुराने, घिसे हुए, नीरस क्यों नहीं लगते? इसका कारण यह है कि दिन-रातों में तुम जीवन पाते रहे हो, प्रतिदिन विकसित होते गये हो। इसी तरह जब तुम उस परमेश्वर में रहने लगोगे, उसमें प्रतिदिन आध्यात्मिक विकास पाने लगोगे तो तुम भी कह उठोगे-"वह अनादिकालीन पुराना सनातन प्रभु मेरे लिए प्रतिदिन फिर-फिर नया होता है, प्रत्येक आज में, प्रत्येक नये दिन में फिर-फिर नया होता है।"

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

रिपब्लिक भारत पर प्रसारित स्वामी रामदेव जी का साक्षात्कार

क्या है स्वामी रामदेव और बामसेफ का टकराव?

.....हाल ही योगगुरु स्वामी रामदेव ने रिपब्लिक टीवी को एक इन्टरव्यू दिया और इसमें ईश्वर को शैतान कहने वाले कथित मूलनिवासियों के आराध्यदेव पेरियार का नाम लेते हुए कहा कि हमारे देश के लिए लेनिन और मार्क्स कभी आदर्श नहीं हो सकते। मैं अंबेडकर के संकल्पों का पोषक हूं, लेकिन उनके चेलों में मूल निवासी कॉन्सेप्ट चलाने वाले लोग हैं। मैं दलितों से भेदभाव नहीं रखता, मगर वैचारिक आतंकवाद के खिलाफ देश में कानून बनाना चाहिए। ऐसे सामग्री को सोशल मीडिया पर बैन कर दिया जाना चाहिए।'.....

वामपंथियों द्वारा धर्म संस्कृति और देश पर किसी भी वैचारिक हमले की क्रिया को फ्रीडम ऑफ एक्सप्रेशन यानि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता कहा जाता है। इससे उन्हें किसी भी प्रकार की निम्न स्तर की बात किसी के भी विरुद्ध करने की स्वतंत्रता प्राप्त होती है। लुटियन बैठी सुंदरियाँ उनके अपशब्दों पर अट्टहास करती हैं। बड़ी बिंदी गेंग निकलकर सामने आता है और सोशल मीडिया पर मुस्लिम और ईसाई चंदे से यू-ट्यूब पर चल रहे करीब 105 चैनलों से लोकतंत्र और संविधान की बात की जाती है।

हाल ही में योगगुरु स्वामी रामदेव ने रिपब्लिक टीवी को एक इन्टरव्यू दिया और इसमें ईश्वर को शैतान कहने वाले कथित मूलनिवासियों के आराध्यदेव पेरियार का नाम लेते हुए कहा कि हमारे देश के लिए लेनिन और मार्क्स कभी आदर्श नहीं हो सकते। मैं अंबेडकर के संकल्पों का पोषक हूं, लेकिन उनके चेलों में मूल निवासी कॉन्सेप्ट चलाने वाले लोग हैं। मैं दलितों से भेदभाव नहीं रखता, मगर वैचारिक आतंकवाद के खिलाफ देश में कानून बनाना चाहिए। ऐसी सामग्री को सोशल मीडिया पर बैन कर दिया जाना चाहिए।'

स्वामी रामदेव के इस बयान के बाद सोशल मीडिया के विशाल वटवृक्ष के नीचे बैठे हुए वामपंथी ट्रोलाचार्य एक्टिव हो गये। उनका मुख मोबाइल स्क्रीन से आते हुए प्रकाश से दमक उठा। वामन मेश्राम जैसे लोग इस बयान पर कूद पड़े और स्वामी रामदेव के खिलाफ एक दुष्प्रचार का खेल शुरू कर दिया गया। सभी ने फ्लैश सहित छायाचित्र खींचकर एक दूसरे का प्रकाशाभिषेक किया। बामसेफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष वामन मेश्राम ने पंजाब में एक कार्यक्रम के दौरान स्वामी रामदेव को चेतावनी देते हुए कहा है कि स्वामी रामदेव हमें वैचारिक आतंकवादी बता रहे हैं। वामन धमकी देते हुए कहता है यह समझाने का समय नहीं है। अगर, समय होता तो मैं बता देता कि बाबा रामदेव क्या कहना चाहता है।

हालाँकि बाबा रामदेव जी के पक्ष में भी लोग सामने आये और कहा ये देश संविधान और लोकतंत्र से चलेगा। यहाँ किसी को आतंकित करके तुम कुछ हासिल नहीं कर सकते। पतंजलि कोई ट्वीटर नहीं जो तुम्हारी गुंडागर्दी से झुक जाए।

लेकिन वामपंथी कथित बौद्धिक समूह, मूलनिवासी गेंग वामन के भक्त हाहाकार कर उठे। क्योंकि रामदेव ने उनका आवरण हटाकर उनकी वैचारिक नग्नता को सामने लाकर वामपंथ के प्रचारकों के षड्यंत्रों का रहस्योद्घाटन किया था।

इस पूरे प्रसंग को जानने और समझने के लिए पेरियार के बारे में जानना अतिआवश्यक है आखिर किस कारण बाबा रामदेव को पेरियार और उनके समर्थकों पर हमला करना पड़ा। असल में मूलनिवासी गेंग के प्रिय नेता पेरियार का जन्म 17 सितम्बर, 1879 को पश्चिमी तमिलनाडु के इरोड में एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। इसका पूरा नाम इरोड वेंकट रामास्वामी नायकर था। लोग उन्हें पेरियार कहकर बुलाते थे जिसका अर्थ था पवित्र आत्मा। इसी कथित पवित्र आत्मा ने अपने जीवन काल में एक पुस्तक लिखी जिसका नाम है सच्ची रामायण, हालाँकि पुस्तक इस को 14 सितम्बर 1999 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने अस्थायी तौर पर प्रतिबंधित कर दिया था। क्योंकि यह पुस्तक पेरियार की गन्दी कल्पनाओं से भरी पड़ी है।

अगर पुस्तक के कुछ अंश आप लोग पढ़ेंगे तो आपको गुस्से के साथ-साथ मूलनिवासी गैंग की बौद्धिकता पर तरस भी आएगा। पेरियार अपनी स्वयं लिखित रामायण में लिखते हैं कि उचित प्यार और सम्मान न मिलने के कारण सुमित्रा और कौशल्या दशरथ की देखभाल पर विशेष ध्यान नहीं देती थीं। जब दशरथ की मृत्यु हुई तब भी वे सो रही थीं और विलाप करती दासियों ने जब उन्हें यह दुखद खबर दी तब भी वे बड़े आराम से उठकर खड़ी हुई थी। पेरियार लिखते हैं कि इन आर्य महिलाओं को देखिये! अपने पति की देखभाल के प्रति भी वे कितनी लापरवाह थीं।

पेरियार अपनी रामायण में श्रीराम में कमियां निकालते हैं, किन्तु रावण को वे बिल्कुल दोषमुक्त मानते हैं। वे कहते हैं कि रावण महापंडित, महायोद्धा, सुन्दर, दयालु, तपस्वी और उदार हृदय जैसे गुणों से विभूषित था। सीताहरण के लिए रावण को दोषी ठहराया जाता है, लेकिन पेरियार कहते हैं कि वह सीता को जबर्दस्ती उठाकर नहीं ले गया था, बल्कि सीता स्वेच्छा से उसके साथ गई थी। इससे भी आगे पेरियार यहां तक कहते हैं कि सीता अनजान व्यक्ति के साथ इसलिये चली गई थी क्योंकि उसकी प्रकृति ही चंचल थी और उसके पुत्र लव और कुश रावण के संसर्ग से ही उत्पन्न हुए थे।

पेरियार भरत और माता सीता के संबंधों को लेकर अपनी रामायण में लिखते है कि जब राम ने वन जाने का निर्णय कर लिया तो सीता ने अयोध्या में रहने से बिल्कुल इन्कार कर दिया कि मैं भरत के साथ नहीं रह सकती, क्योंकि वह मुझे पसन्द नहीं करता। पेरियार लिखते हैं कि भरत सीधा-सीधा सीता के चरित्र पर उंगली उठाता रहता था।

पेरियार आगे लिखता है कि सीता हीरे-जवाहरात के आभूषणों के पीछे पागल रहती है। राम जब उसे अपने साथ वन ले जाने को तैयार हो जाते हैं, तो उसे सारे आभूषण उतार कर वहीं रख देने को कहते हैं। लेकिन सीता चोरी छुपे कुछ अपने साथ भी रख लेती है। यानि अपने पति की आज्ञा की भी अवहेलना कर सकती है यह भी जताता है कि वह गहनों के लिये अनैतिक समझौते भी कर सकती है।

पेरियार ने माता सीता को झूठी लिखा कि वह उम्र में बड़ी होकर भी राम को तथा रावण को अपनी उम्र कम बताती है। उसकी आदत उसके चरित्र पर शंका उत्पन्न करती है। यही नहीं पेरियार अपनी रामायण में लिख गया कि सीता ने लक्ष्मण को राम की रक्षा के लिये भेजती है जिससे वह अकेली हो और स्वेच्छा से रावण के साथ जा सके।

- जारी पृष्ठ 6 पर

अफ्रीका में बढ़ते ईसाईकरण पर चिन्ता और चिन्तन

क्या सफेद यीशु काले लोगों की फरियाद नहीं सुनता?

.....अफ्रीका में वूडू जाति के लोग आज भी प्रकृति के पंचतत्वों पर विश्वास करते हैं। जैसा की भारत की वैदिक परंपरा में माना जाता है। इसलिए अब अफ्रीकियों को अपने भाग्य को अपने हाथों में ले लेना चाहिए। उनके पूर्वजों के प्राचीन तरीकों को जानने के लिए वापस लौटें और खुद को बचाएं। वरना अफ्रीका को गोरे यीशु के नाम पर तथा इस्लाम वाले अल्लाह के नाम लगातार उनके संसाधनों को दुहते रहेंगे। कोई पैगम्बर उन्हें बचाने अफ्रीका नहीं आएगा। हाँ अफ्रीका में पर्याप्त मानव और प्राकृतिक संसाधन हैं अगर वह उन्हें बचा लें तो बचे रह सकते हैं। वरना श्वेत रंग के यीशु और हरे रंग के झंडो में एक दिन अफ्रीका का भविष्य दफन हो जायेगा। .....

भले ही मुफ्त की चीज लोगों को बड़ी प्यारी लगती हो लेकिन कई बार मुफ्त की चीज भी आफत बन जाती है जिसका खामियाजा पीढ़ियों तक भुगतना पड़ता है। लेकिन हमारे देश के बहुत सारे लोग ऐसे हैं अगर इन्हें मुफ्त में सांप भी मिल जाये तो इंकार नहीं करेंगे। मुफ्त की बीमारी के चक्कर में एक बार दक्षिण अफ्रीकी राजनेता डेसमंड टूटू ने लिखा था कि जब ईसाई मिशनरी लोग अफ्रीका आये, तो उनके पास बाइबल थी, जिसे वे मुफ्त में बांट रहे थे, और हमारे पास थी जमीन। उन्होंने कहा कि हम तुम्हारे लिए मुफ्त में प्रार्थना करने आये हैं। हमने अपनी आंखें बंद कर लीं और जब खोलीं, तो हमारे हाथ में बाइबल थी और उनके हाथ में हमारी जमीन।

नतीजन आज अफ्रीकी लोग किसान से मजदूर बनकर रह गये और बाइबल बाँटने वाले जमींदार। किन्तु फिर भी अफ्रीकी लोग एक मजबूत धारणा और विश्वास के साथ घुटनों के बल बैठकर इस आस में जीवन जी रहे हैं कि यीशु मसीह उन्हें गरीबी, भुखमरी और पीड़ा से बचाने आएगा। लेकिन किसी को यह सोचने की फुरसत नहीं है कि क्या यह सफेद यीशु बहरा है, या फिर रंग भेद के कारण काले अफ्रीकियों की आवाज अनसुनी कर रहा है?

हाँ अगर उसने अफ्रीकी लोगों को छोड़ दिया जिन्हें पादरियों ने बाइबल बांटते सभी क्लेशों से बचाने का वादा किया था तो अफ्रीकी समुदाय का कुछ भला जरुर हो सकता है। इसलिए अफ्रीकियों को इस सपने से बाहर आना होगा यीशु उनकी भलाई सोच रहा है। वरना एक दिन उन्हें जागने पर एहसास होगा कि उन्हें एक झूठ बेचा गया था कि वह अफ्रीकियों को इस दुनिया की दुष्टता से बचाने के लिए यीशु आ रहा है। वह न अब आ रहा है और न ही बाद में आएगा।

अफ्रीकियों को समझना होगा कि यीशु के अनुयायी गोरे लोग हैं और वह यीशु के आने के बाद भी काले लोगों को गुलाम बनाकर जीवन जीते रहे हैं, वर्षों पहले जब दुनिया एक दूसरे समुद्री तटों से जुड़ने लगी तब यूरोप के पादरी अफ्रीका समेत अन्य हिस्सों में गये और ईसाइयत का प्याला पिलाने लगे। यूरोपीय लोग जिस धर्म को लेकर अफ्रीका पहुंचे, उसमें यीशु का वादा है कि वह सभी माध्यमों से उनकी समस्या हल कर रहा है।

अफ्रीकी समुदाय को समझना होगा उनकी समस्या केवल यीशु है। आज वहां यूरोपीय पादरी जीसस के सामने आकर उन्हें बचाने के लिए घुटने नहीं टेक रहे हैं बल्कि वे अफ्रीका के संसाधनों को लेने में व्यस्त हैं और अफ्रीकी समझ रहे हैं कि वे लोग यीशु मसीह के प्रचार और सुसमाचार को अफ्रीकी लोगों तक पहुंचा रहे हैं। लगभग 350 सालों तक अफ्रीकी अपनी समस्याओं को हल करने के लिए यीशु से प्रार्थना कर रहे हैं। अभी तक इन वर्षों में यीशु ने कोई उत्तर उन्हें नहीं दिया है। शायद वह अफ्रीका से संसाधनों की चोरी करने के लिए यूरोपीय और अमरीकियों को अधिक आशीर्वाद देने में व्यस्त है।

अब अफ्रीकी लोगों को डराया जा रहा है कि वे नरक जाएंगे और उनके वर्षों से परोसे झूठ पर भरोसा करने करके स्वर्ग जायेंगे। जबकि अफ्रीकियों ने हमेशा पुनर्जन्म में विश्वास किया है और ईश्वर का विधान भी यही है। हाँ इसके अलावा यदि अफ्रीकियों को स्वर्ग ही जाना है तो उन्हें उस स्वर्ग का निर्माण अपनी भूमि पर करना होगा, न कि काल्पनिक स्वर्ग के भरोसे जीना होगा।

अफ्रीकी समुदाय को सोचना होगा कि आप इन दिनों यूरोप में कितने चर्चों को देखते हैं? यदि यूरोपीय लोग जो यीशु मसीह को आपके पास लाए थे, वही अब दूर भाग रहे हैं तो अफ्रीका क्यों यीशु का ख्याल रखे? प्रश्न यह भी है कि यदि यीशु इतना प्रभावी था तो खुद को दु:ख, पीड़ा मृत्यु से क्यों नहीं बचा पाया?

अफ्रीका में आज अनेकों स्वास्थ्य और वित्तीय चुनौतियां बनी हुई हैं। ईसाइयत और इस्लाम से पहले अफ्रीका का ऐसा हाल नहीं था। उनके अपने धर्म थे जो कई तरह के प्रचलित थे जिनमें से आज भी कुछ धर्म प्रचलन में हैं। लेकिन अब इस्लामिक कट्टरता और ईसाई वर्चस्व के दौर के चलते उनका अस्तित्व लगभग खत्म होता जा रहा है। अफ्रीका में वूडू जाति के लोग आज भी प्रकृति के पंचतत्त्वों पर विश्वास करते हैं। जैसा की भारत की वैदिक परंपरा में माना जाता है। इसलिए अब अफ्रीकियों को अपने भाग्य को अपने हाथों में लें लेना चाहिए। उनके पूर्वजों के प्राचीन तरीकों को जानने के लिए वापस लौटें और खुद को बचाएं। वरना अफ्रीका को गोरे यीशु के नाम पर तथा इस्लाम वाले अल्लाह के नाम लगातार उनके संसाधनों को दुहते रहेंगे। कोई पैगम्बर उन्हें बचाने अफ्रीका नहीं आएगा। हाँ अफ्रीका में पर्याप्त मानव और प्राकृतिक संसाधन हैं अगर वह उन्हें बचा लें तो बचे रह सकते हैं। वरना श्वेत रंग के यीशु और हरे रंग के झंडो में एक दिन अफ्रीका का भविष्य दफन हो जायेगा।

– राजीव चौधरी

प्रेरक प्रसंग

शुभ कार्य शुभ ही है

निजाम की पुलिस, निजाम की सेना तथा उसके रजाकार योजनाबद्ध ढंग से निरन्तर हिन्दुओं की हत्याएँ व लूटपाट कर रहे थे। हिन्दुओं का दोष केवल यही था कि वे हैदराबाद को स्वतन्त्र भारत के तत्कालीन गृहमन्त्री सरदार पटेल से मिलकर आग्रह करते रहे कि राज्य के देशभक्त हिन्दुओं की रक्षा की जाए। सरदार पटेल इसके लिए स्वयं बड़े चिन्तित थे, परन्तु नेहरू को सरदार पटेल के चिन्तित होने में भी साम्प्रदायिकता की गंध आती थी। नेहरूजी इस कार्य को भी लटकाना चाहते थे। लटकाने का अर्थ उलझाना निकल आता, यदि सरदार पटेल पुलिस एक्शन न करते।

सरदार पटेल ने 13 सितम्बर के दिन सेना को राज्य पर चढ़ाई करने का आदेश दिया। भारत के उस समय के सेनापति जनरल बलशूर ने सरदार को कहा 13 का अंक शुभ माना जाता है तथापि यदि आपको आपत्ति है तो चढ़ाई 12 को की जाए।''

पाठक! यह तथ्य नोट कर लें कि यदि चढ़ाई 13 को न की जाती तो कई उलझनें पैदा हो जातीं। मन्त्री परिषद् के गुप्त निर्णय की सूचना किसी देशद्रोही से निजाम को मिल गई। 13 को ही हैदराबाद से शोलापुर को आने वाली सड़क के पुल निजाम की सेना ने उड़ा देने थे। सरदार की तत्परता से नलदुर्ग में निजाम की जीप पकड़ी गई। इसमें पुल उड़ाने वाली विस्फोटक सामग्री सहित निजाम के अधिकारी व सैनिक भारतीय सेना ने पकड़ लिये। उन्हें विश्वस्त सूत्रों से पता चल चुका था कि भारतीय सेना 15 सितम्बर को चढ़ाई करेगी। दूरदर्शी पटेल ने देश का कितना हित किया। तीन दिन में निजाम राज्य परास्त हो गया। यदि पुल उड़ा दिये जाते तो हैदराबाद भी एक समस्या बनकर संयुक्त राष्ट्र संघ में वादविवाद व प्रस्तावों का विषय बन जाता।

सरदार पटेल ने सेना को आदेश दिये कि सब दिशाओं से चढ़ाई करते हुए पण्डित रुद्रदेवजी–जैसे आर्यवीरों से मार्गों का पूरा विवरण लेकर सेना आगे बढ़े।

– प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

प्रथम पृष्ठ का शेष

1000 कुण्डीय एकरूपीय यज्ञ....

और परम्पराओं का उल्लेख करते हुए वर्तमान में आर्य समाज के द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों से समाज को अवगत कराया। पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी ने देश की युवा पीढ़ी को वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों को अपनाने पर जोर दिया।

महर्षि दयानंद निर्वाण - नाटक मंचन

इस अवसर पर आर्य समाज के संस्थापक, युग प्रर्वतक महर्षि देव दयानंद सरस्वती जी के अंतिम क्षणों पर आधारित एक लघु नाटिका प्रस्तुत की गई। यह नाटिका इतनी भावपूर्ण थी कि इसे देखकर उपस्थित जनसमुदाय भावविभोर हो गया। इस नाटक मंचन से यह स्पष्ट हो गया था कि महर्षि दयानंद सरस्वती के जीवन का पल-पल, क्षण-क्षण मानवजाति के उत्थान और कल्याण को समर्पित था। ऐसे महान ऋषि की अमर वाटिका आर्य समाज उनके बताए हुए पद चिह्नों पर लगातार आगे बढ़ रही है। कार्यक्रम में ब्रह्मचारी अरुण ने आर्य समाज की एक एप का विमोचन भी किया। कार्यक्रम के दौरान आर्य समाज के वैदिक साहित्य के स्टाल सहित प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया था।

1000 कुण्डीय विशाल एकरूपीय यज्ञ का विहंगम दृश्य

सूर्य अस्तांचल की ओर जा रहा था। सन्धि वेला के समय धीरे-धीरे धरा पर अंधेरा पसरने लगा तभी दिल्ली पब्लिक स्कूल जीन्द रोड, रोहतक (हरियाणा) के प्रांगण में लगभग 1000 यज्ञमान, जिनमें विद्यार्थी, गृहस्थी और युवा सम्मिलित थे। सबके सामने एक जैसा तांबे का यज्ञ कुण्ड, समिधा, सामग्री, घी और आचमन पात्र सुसज्जित थे। ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना मंत्रों का सामूहिक पाठ किया गया और यज्ञ ब्रह्मा के निर्देशन में अग्न्याधान का क्रम आरंभ हो गया। चारों तरफ इस यज्ञ के विशाल और विराट स्वरूप को देखकर सभी लोग जय-जयकार करने लगे और देखते ही देखते यज्ञ का यह विहंगम दृश्य सबको आर्कषित और प्रकाशित करने लगा। हजारों की सख्या में जलती हुई यज्ञ की ज्योति, उसमें स्वाहा के साथ प्रदान की गई औषध युक्त सुगंधित सामग्री और घी, वेद मंत्रों की मधुर ध्वनियों से सम्पूर्ण वातावरण सुगंधित और गुंजायमान हो उठा। उस समय ऐसा लग रहा था कि जैसे सम्पूर्ण धरा यज्ञमय हो गई है। इस विशाल यज्ञ का एक ही उद्देश्य था कि पर्यावरण की शुद्धि हो, देश के युवा और बच्चे यज्ञ की ज्योति से प्रेरणा लेकर अपने जीवन का विकास करें, माता-पिता और गुरुजनों के प्रति निष्ठावान बनें, सच्चे ईश्वर भक्त बनकर राष्ट्र के अच्छे नागरिक बनें। इस पूरे कार्यक्रम की भव्य सफलता के लिए वहां उपस्थित सभी आर्य नर-नारी एक दूसरे को बधाई दे रहे थे।

कार्यक्रम के आयोजक वैदिक जन कल्याण के अध्यक्ष श्री मुकेश आर्य जी ने सभी अतिथि महानुभावों का हृदय से धन्यवाद किया तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश, दिल्ली पब्लिक स्कूल रोहतक, यज्ञ में यज्ञमान बने विद्यार्थी, गृहस्थ और युवाओं का भी हृदय से धन्यवाद किया। प्रेम-सौहार्द के वातावरण में यह अदभुत प्रेरणादायक कार्यक्रम संपन्न हुआ।

- मुकेश आर्य, अध्यक्ष जन कल्याण सभा

1000 कुण्डीय यज्ञ का ओ३म ध्वज फहराकर शुभारम्भ करते महाशय धर्मपाल जी एवं संन्यासीवृन्द तथा अन्य महानुभाव। ओमध्वज लहराने पर प्रसन्नता व्यक्त ककरते महाशय जी, श्री मुकेश आर्य, स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक जी। आचार्य ज्ञानेश्वर जी की द्वितीय पुण्य तिथि पर स्मरण करते हुए महाशय धर्मपाल जी, श्री प्रेम अरोड़ा जी एवं श्री मुकेश आर्य जी सहित अन्य महानुभाव।

बात बड़ी भले ना लगे किन्तु प्रेरणा बड़ी देती है

सार्वजनिक जीवन में सच्चाई और ईमानदारी की कीमत जितनी प्राचीनकाल में थी उतनी ही कीमत आज भी देखने को मिलती है। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के आदर्श जो जीवन में उतार लेता है, ईश्वर उसे सत्य और न्याय के मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। अभी पिछले कुछ दिन पहले गाँव बरहाना के रहने वाले कोसीकलां आर्य समाज के प्रधान डॉ. अमरसिंह पौनिया अपनी आर्यसमाज में कार्यक्रम हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय में वैदिक प्रकाशन से पटके व अन्य सामान खरीदकर ले गये थे। श्री पौनिया जी को जो बिल वैदिक प्रकाशन की ओर से दिया गया उसमें भूलवश 1500 रूपये कम जोड़े गये थे। किन्तु कार्यक्रम के सफल समापन के उपरांत जब डॉ अमरसिंह पौनिया ने अपना हिसाब देखा तो 1500 रूपये ज्यादा पाए तो वह वापिस दिल्ली सभा कार्यलय में पहुंचे और पैसे जमा कराए। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सपरिवार पधारे डॉ. अमरसिंह पौनिया जी आभार एवं धन्यवाद व्यक्त किया गया।

आर्य समाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली में गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज कीर्ति नगर नई दिल्ली द्वारा अश्विनी पूर्णिमा से कार्तिक पूर्णिमा तक गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिदिन 108 गायत्री मंत्रों की आहुतियां दी गई। 12 नवंबर 2019 को पूर्णाहुति हुई। यज्ञ में प्रतिदिन एक दंपत्ति तथा अन्य सदस्य यजमान बनते रहे। पूरे माह बड़े उत्साह और धार्मिकता का वातावरण रहा। पूर्णाहुति कार्यक्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री शिवकुमार मदान जी व श्रीमती प्रेमलता जी, वैदिक विदुषी श्रीमती उषा व श्री राजेश गुप्ता जी, श्रीमती कमल व अजीत वर्मा जी, श्रीमती विमल व श्री सुभाष मल्होत्रा जी, श्रीमती पुष्पा व श्री विश्वमित्र मक्कड़ जी, श्रीमती संयोगिता चड्ढा जी, श्रीमती कुसुम टांगरा जी, श्रीमती सरोज मल्होत्रा जी, श्रीमती वीणा जी, श्रीमती वीना ओबरॉय जी, श्रीमती आरती खुराना जी, श्रीमती अरुणा नारगं जी, श्रीमती उमा वधवा जी व श्रीमती चन्द्र मुखी जी यजमान बने, सब का बहुत-बहुत धन्यवाद। श्रीमती प्रेमलता मदान ने गायत्री मंत्र की व्याख्या की तथा श्री दिनेश पथिक जी ने महर्षि देव दयानंद का धन्यवाद करते हुए प्रभुभक्ति के प्रेरणा दायक मनमोहक भजन सुनाए। श्री शिवकुमार मदान जी व श्रीमती प्रेमलता जी को एक स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया गया। इस महायज्ञ में पूरे माह में 39 दंपत्ति तथा 38 एकल यजमान बने, इस तरह 118 यजमान पूरे माह में बने सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद।

- सतीश चड्ढा, मंत्री

वैदिक रेफरेंस लाइब्रेरी - एक वृहद योजना

दिल्ली सभा के इस सृजनात्मक अभियान में प्रत्येक आर्य व्यक्ति, परिवार, संस्था और समाज वैदिक साहित्य को एकत्रित करने में पूरी शक्ति से करें सहयोग प्रदान

किसी भी संस्था या संगठन के विचार, मान्यताएं और परंपराओं के प्राण उसके साहित्य-पुस्तकों में समाए होते हैं। वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के उत्थान में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी से लेकर पंडित लेखराम, स्वामी श्रद्धानंद, लाला लाजपतराय, महात्मा हंसराज, पंडित गुरूदत्त विद्यार्थी, स्वामी दर्शनानंद, स्वामी स्वतंत्रानंद, महात्मा नारायण स्वामी, पंडित तुलसीराम, ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, गंगाप्रसाद उपाध्याय, आर्यमुनि इत्यादि हमारे महापुरुषों ने वेदज्ञान की अविरल धारा को जन-जन तक पहुंचाने के लिए कठिन परिश्रम किया और अत्यधिक मात्रा में साहित्य सृजन कर पुस्तकों के रूप में उसे वितरित भी किया। इसी ज्ञान संपदा की बदौलत आज हम देश के कोने-कोने में और विश्व के 32 देशों तक विस्तार कर पाए हैं। इस क्रम को लगातार आगे बढ़ाने की प्रेरणा देते हुए पंडित लेखराम ने कहा था कि विचारशीलता और लेखन का कार्य आर्यसमाज की ओर से निरंतर चलते रहना चाहिए। जिसके परिणामस्वरूप आर्य समाज के सैकड़ों सुप्रसिद्ध संन्यासियों और विद्वानों ने वैदिक साहित्य कोष की निरंतर अभिवृद्धि की। किंतु आज हामरे महापुरुषों के द्वारा निर्मित कई पुस्तकें ऐसी हैं जो बहते समय के प्रवाह के साथ-साथ धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही हैं। बहुत

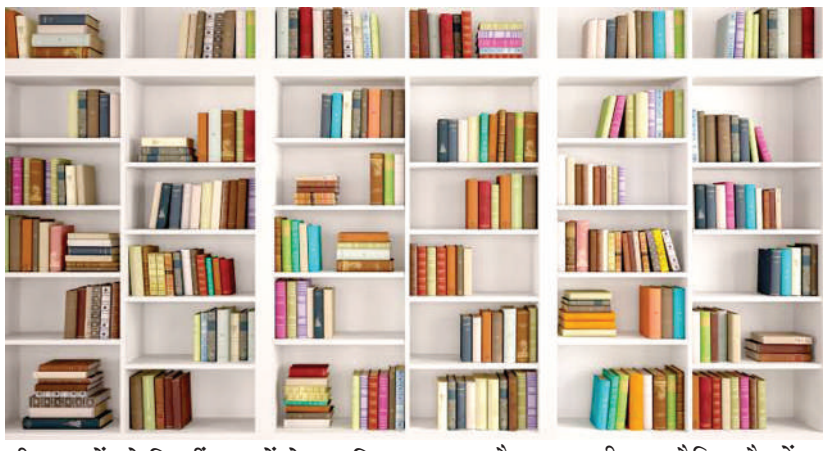

सी पुस्तकों को किन्हीं कारणों से प्रकाशित नहीं किया जा रहा है और इस तरह बहुत-सी पुस्तकें जो अत्यंत उपयोगी थीं, उनका मिलना लगातार बहुत कठिन होता जा रहा है।

इन समस्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने कई वर्षों पूर्व "वैदिक रेफरेंस लाइब्रेरी" की योजना का शुभारंभ किया था और सभी आर्य समाजों एवं आर्य जनों से अनुरोध किया था कि आपके घर की अथवा आर्यसमाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं की लाइब्रेरी में कहीं पर भी दुर्लभ वैदिक साहित्य उपलब्ध हो तो कृपया उसे दिल्ली सभा द्वारा संचालित वैदिक रेफरेंस लाइब्रेरी में पहुंचाने की कृपा करें। बहुत से आर्यजनों ने बहुत-सी उपयोगी पुस्तकें पहुंचाई भी हैं, उन सभी महानुभावों का धन्यवाद। लेकिन सभा का यह कार्य अभी अधूरा है, सभा की यह वैदिक रैफरेंस लाइब्रेरी की योजना बड़ी व्यापक है, इसके पीछे भावना यही है कि-

1) आर्य समाज का संपूर्ण वैदिक साहित्य एक स्थान पर पुस्तकों के रूप में हार्ड कापी और साफ्ट कापी दोनों फार्मेट में उपलब्ध हो और यह सारी वैदिक ज्ञान संपदा आर्य समाज की वैबसाइट पर भी उपलब्ध हो।

2) जिसके परिणाम स्वरूप संपूर्ण विश्व में कहीं भी, कभी भी और कोई भी आर्य सज्जन जिस किसी भी पुस्तक का स्वाध्याय करना चाहे अथवा किसी पुस्तक के रेफरेंस से कोई बात प्रमाणित करना चाहे तो वह तुरंत आर्य समाज की वैबसाइट पर जाकर ई.संस्करण द्वारा कर सके।

3) इस तरह आर्य समाज का प्रचार प्रसार भी तीव्रगति से संभव होगा, हमारे पूर्वजों ने जिस लोकोपकारी भावना से कठिन तप करके पुस्तकों की रचना की थी उसकी रक्षा होगी और हमारी अमूल्य निधि वैदिक ज्ञानधारा भी सुरक्षित होगी।

4) इसके साथ साथ आधुनिक तकनीक का उपयोग करके हम देश की युवा पीढ़ि को आर्य विचारधारा और वैदिक ज्ञानधारा से सरलता से जोड़ने मे सफल होंगे।

5) बंधुओ, आज समाज तीव्र गति से बदलाव की ओर बढ़ रहा है, इस परिवर्तन की धारा में हमें अपने वैदिक विचार-मान्यताएं और परंपराओं को सहेजना भी है और उन्हें प्रसारित भी करना है। इसी भावना और कामना को साकार करने में वैदिक रेफरेंस लाइब्रेरी बहुत बड़ी भूमिका निभाएगी।

अत: इस विशेष अनुरोध पर गहराई से चिंतन करें, इसके महत्व को समझें और वैदिक साहित्य को वैदिक रैफरेंस लाइब्रेरी में अपना नाम, पता एवं सम्पर्क सूत्र लिखकर रजिस्टर्ड डाक/कोरियर द्वारा **"प्रबन्धक, वैदिक रैफरेंस लाईब्रेरी"** के नाम - **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें।

- विनय आर्य, महामंत्री

आपके लिए अनुपयोगी वस्त्र, जूते-चप्पल, स्टेशनरी के सामान, खिलौने आदि को जरुरतमंद लोगों तक पहुंचाने की विशेष योजना

आओ, हम जुड़ें 'सहयोग' से : सच्चे - अच्छे योग से

"सहयोग" सेवा यज्ञ हमारा
जरूरतमंदों को मिला सहारा
आओ, हाथ बढ़ाएं- सहयोगी बन जाएं

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित सहयोग एक ऐसी कल्याणकारी दिव्य योजना है, जिससे लाखों लोग लगातार लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

सहयोग : क्या है योजना?

सहयोग एक चार अक्षरों का छोटा-सा शब्द है, लेकिन इसकी महिमा अपरमपार है। सहयोग के माध्यम से शहरों, नगरों और आदिवासी क्षेत्रों में अभावग्रस्त मनुष्यों की सेवा सहायता का एक महान अभियान गतिशील है। यह सर्वविदित है कि अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा मानव सेवा के कई विशेष कार्य काफी लंबे समय से चल रहे हैं। इन सेवाकार्यों को गति देते हुए संघ के अधिकारियों ने गीरब व आदिवासी क्षेत्रों में ईश्वर की अमृत संतान मनुष्यों को बड़ी तंगहाली और बदहाली में करीब से व्यथित जीवन जीते देखा तो ज्ञात हुआ कि विश्व की छटी अर्थव्यवस्था के रूप में विख्यात भारत में आज भी लोग अपनी मूलभूत जरूरतों से महरूम हैं। तन ढांपने के लिए वस्त्र और जूते, चप्पल आदि की जरूरतें भी लोगों को रुला रही हैं। यह देखकर आर्य नेताओं को ऋषि दयानंद के महान जीवन से जुड़ी घटना याद आ गई कि किस तरह एक निर्धन मां ने अपने बच्चे के मृत शरीर से कफन को उतार कर उसे नग्न ही जल में प्रवाहित कर दिया था। इस मार्मिक घटना से ऋषि का कोमल हृदय द्रवित हो उठा और उन्होंने अपने शरीर पर वस्त्र धारण करना ही बंद कर दिया। ऋषि दयानंद के अनुयायी आर्यजनों ने महान कर्मयोगी महाशय धर्मपाल जी से निर्धन बस्तियों में और आदिवासी बंधुओं की इस पीड़ा के विषय में विचार-विमर्श कर के आदिवासी क्षेत्रों में या अन्य किसी भी स्थान पर जरूरतमंदों की पहचान कर उन्हें पुराने किंतु उपयोगी वस्त्र जूते, चप्पल, पुस्तकें, खिलौने, स्टेशनरी आदि समानों को उन तक पहुंचाने के लिए **"सहयोग"** नामक योजना का शुभारंभ किया। जो कि आज तीव्र गति से जरूरतमंद छात्रों, युवाओं और वृद्धजनों को लगातार सहयोग प्रदान कर रहा है।

कैसे बनें "सहयोग" के सदस्य?

⋆ सहयोग में सहभागिता के लिए पहला बिंदु है कि आप जिन वस्त्रों का प्रयोग नहीं करते, उन उपयोगी वस्त्रों को स्वच्छ करके, प्रेस कराके, पैकट में रखकर अपनी नजदीकी आर्यसमाज अथवा सहयोग के सेंटर पर पहुंचाएं ।

⋆ इसी तरह से आप जिन जूते, चप्पलों का प्रयोग नहीं करते वे दूसरों के काम आने लायक हों तो उन्हें पोलिश कराके उन्हें भी पैकट में रखें और वस्त्रों की तरह सहयोग के लिए सेंटर पर भेजें।

⋆ इस क्रम में आप खिलौने, पुस्तक, कॉपी, पैन, पेंसिल आदि उपयोगी वस्तुएं भी विधिवत जैसे किसी को गिफ्ट दिया जाता है वैसे ही पैक करके सहयोग के सहयोगी बनें।

इस सारे समान को सहयोग स्वयं अपनी गाड़ी द्वारा प्राप्त कर लेगा और आप सहयोग के अनन्य सहयोगी सदस्य बन जाएंगे।

निवेदन :- आधुनिक परिवेश में आर्यजनों को ऐसी विभिन्न सेवा योजनाओं को क्रियान्वित करना ही होगा, क्योंकि मानवता आर्य समाज को पुकार रही है, अन्य अनेक तथाकथित दिखावटी, बनावटी संस्थाएं सेवा के नाम पर बढ़ चढ़कर ढोंग कर रही हैं, लोभ-लालच में भोले-भाले

निर्धन लोगों कों विधर्मी बनाने पर तुली हुई हैं। अत: हमें अपने कर्तव्यों को समझना होगा और आर्य समाज की और से निरंतर सृजनात्मक कार्यो को गति देनी होगी। इसलिए आप दिल्ली अथवा एन सी आर में जहां भी रहते हैं वहीं अपने आर्य समाज में, आर्य शिक्षण संस्थान में या अपने गली-मोहल्ले में सहयोग का सेंटर बनाएं और इस अनुपम सेवा को वृहद अभियान का रूप देने में सहयोगी बनें दें।

आओ, करें सहयोग,
शुभ कर्मो का योग

अधिक जानकारी प्राप्त करने, सहयोग से जुड़ने के लिए अथवा आप द्वारा एकत्र किया गया सहयोग जरुरतमंदों तक पहुंचाने के लिए मो. नं. 9540050322 पर सम्पर्क। - *व्यवस्थापक*

Child Education

A man becomes really truly knowledgeable, if his Mother, Father and Acharya all the three act as good teachers. The mother can provide her children with best teachings and the benevolent habits. That mother is truly fortunate, who teaches the gentlemanly behaviour to her children since inception till the completion of their education.

Mother should educate her children at her best, so that they may become civilized and do not act, physically or otherwise, improperly. She should try that the child pronounces clearly and distinctly, from the very beginning. The *phonetic* pronuciation should be accurate from the point of view of their place of articulation, the effort involved, and with proper length and duration.

As soon as it starts speaking, the child must be taught good sayings, and should be trained in talking and behaving properly with the parents, respectables, scholars, and the administrators etc,

The children of both the sex should be introduced to- and trained in the usage of Devanagri (Hindi) Alphabet, along with the Alphabet of other national languages. After that they must learn the sayings from scriptures, in the form of Mantras, verses or prose, which might educate them in better way as regards to the knowledge, religion, God, and social behaviour and etiquettes etc. They must also be told about all the adverse things, pertaining to religion as well as knowledge, so that they neither believe in falsehood, such as regarding demons and jins etc., nor get sorrows resulting from some misconceptions, as also feel joy in observing celibacy, i.e. Brahmacharya. For the last thing, the students should try to concentrate on their education and learning, avoiding always listening, enjoying or thinking about the sensuous pleasures. The parents should teach him these and other such things.

The parents and teachers should always teach their wards only the true things and should implore them 'You should try to emulate only good and righteous deeds of ours, not the bad ones.' The teachers should also try to explain the same sayings, from scriptures and other authoritative works, as have already been taught by the parents. The teachers should always take healthy, nourishing and *mind-making* food. The same should be provided to the students as well. The teachers as well as the students should avoid meat and drinks. No one should enter into unknown waters.

Mother should educate her child up to its fifth year, and the father upto eighth. The educated people should send their children to the Gurukulas, after performing their 'sacred thread ceremonies', where the well learned male and female teachers are engaged in giving education. The untrained parents should send their children directly to the Gurukula, without performing any ceremony, as they themselves can't guide their wards. Severity and scolding should also be employed at right times, as the love alone does not always succeed.

Those parents are really the worst enemies of their wards, who do not provide for their education. It is the most sacred and heartening duty of the parents that they should try to equip. their wards with the best of knowledge, religion, civility and education, with all the power at their command.

To be continued.....

With thanks By:
"Flash of Truth"

प्रथम पृष्ठ का शेष स्वास्थ्य रक्षा के लिए प्रदूषित हवा ...

अस्वस्थ होंगे, तो वे बुरी तरह से प्रभावित हो सकते हैं। इसलिए सबसे पहली जरूरी चीज यह है कि हम अपने फेफड़े को स्वस्थ रखें। स्वस्थ फेफड़े आपको कई बीमारियों से बचाते हैं। फेफड़ों को स्वस्थ रखने के लिए सबसे ज्यादा जरूरी है योग करना। योग में भी प्राणायाम-अनुलोम -विलोम, कपाल भाति और भस्त्रिका आदि जरूर करें। ध्यान रहे, ये योग घर के भीतर रहकर ही करें, बाहर पार्क आदि में कतई न जाएं। इसके नियमित करने से आपके फेफड़े स्वस्थ रहेंगे। फेफड़े में सांस के रास्ते धूल कण जाकर जम जाते हैं, इसलिए फेफड़ों की सफाई बहुत जरूरी होती है और इसके लिए प्राणायाम बेहतर उपाय है।

अस्वच्छ हवा का सबसे ज्यादा नुकसान उस आम नागरिक को होता है, जो सड़कों पर है या दिन भर घर से बाहर रहकर अपना काम-काज करता है। जो लोग कार्यालयों में या दीवारों से घिरी जगहों पर काम करते हैं, उनको ज्यादा नुकसान नहीं है, फिर भी काम पर जाते-आते उन्हें अपना ध्यान रखना पड़ेगा। आम नागरिकों को चाहिए कि जितना संभव हो सके, वे कम से कम बाहर रहें। खास तौर पर बच्चे और बुजुर्गों पर यह खासा असर करता है। एक और बात बेहद महत्त्वपूर्ण है कि एकदम सुबह और फिर शाम के वक्त बिल्कुल भी बाहर निकलने से बचें। धूल कणों से भरे वायु प्रदूषण से बचने की कोई दवा नहीं है, इसने बचने का सीधा उपाय है जागरूकता और सावधानियां। मैं एक डॉक्टर हूं, फिर भी यह बात बता रहा हूं कि प्रदूषण से बचने का उपाय सावधानियां ही हैं, दवाई नहीं। बाहर जाना अगर जरूरी हो, तो पॉलूशन मास्क लगाकर ही जाएं, ताकि धूल कण सांस में न जा सकें। प्रदूषित हवा में जो पार्टिकुलेट मैअर होते हैं, उससे एक तो फेफड़े पर तो असर पड़ता ही है, ब्रेन पर भी असर पड़ सकता है। हमारे ब्रेन को ऑक्सीजन की जरूरत होती है, लेकिन, अगर हवा स्वच्छ नहीं होगी, तो ब्रेन को स्वच्छ ऑक्सीजन भी नहीं मिलेगी और फिर ब्रेन पर आघात के खतरे जैसी संभावना बढ़ जायेगी। इसलिए स्वच्छ हवा जरूरी है।

बीते कई साल से यह एक ट्रेंड बन गया है कि सर्दियां आते ही हवा में प्रदूषण का स्तर तेजी से बढ़ जाता है। लेकिन, समझ में यह नहीं आता कि आखिर सरकारें इस पर नियंत्रण के लिए कोई ठोस कदम क्यों नहीं उठातीं और सर्दियां आने के पहले से ही इसके उपाय क्यों नहीं करती हैं। दूसरी बात यह है कि देश के नागरिक भी इस बात को लेकर कोई आंदोलन नहीं करते, ताकि सरकार जागे और हर स्तर पर जरूरी कदम उठाये। सुप्रीम कोर्ट तक बोल चुका है कि दिल्ली एक गैस चैंबर बन चुका है लेकिन सरकारें कोर्ट की भी नहीं सुनतीं, ऐसा लगता है। इसलिए जरूरी है कि जागरूकता के साथ-साथ जनता को शांतिपूर्ण आंदोलन भी करना पड़ेगा, क्योंकि स्वच्छ हवा जनता का हक है। दूषित हवा से एक तो नागरिकों का नुकसान होता है, दूसरा उसके परिवार का नुकसान होता है, फिर तीसरा वह जहां रहता है वहां यानी समुदाय का नुकसान होता है, और फिर अंत में देश का नुकसान होता है। यानी लोग बीमार होंगे, तो देश भी बीमार होगा। इसलिए सरकारों को यह सोचना चाहिए कि प्रदूषण पर नियंत्रण करके वे अपने देश का नुकसान न होने दें। ❑

पृष्ठ 2 का शेष क्या है स्वामी रामदेव और बामसेफ ...

बौद्धिक आतंक की हद देखिये आगे लिख रहा है कि एक बाहरी व्यक्ति (रावण) आता है और सीता के अंग-प्रत्यंगों की सुन्दरता का, यहां तक कि स्तनों की स्थूलता व गोलाई का भी वर्णन करता है और वह चुपचाप सुनती रहती है। इससे भी उसकी चारित्रिक दुर्बलता प्रकट होती है।

ऐसी न जाने कितनी घृणित सोच पेरियार अपनी रामायण में लिख जाता है और पशुपतिनाथ से तिरूपति तक लाल गलियारा बनाने की साजिशें और भारत की राजसत्ता पर कब्जे का सपना देखने वाले हैं वामपंथी कथित मूलनिवासी खुशी-खुशी एक दूसरे को सुनाते और चटकारे लेते हैं। कारण आज बामसेफ के कंधे पर बेताल की तरह लटकने वाले मुस्लिम और ईसाई संगठन खुश हैं क्योंकि वैदिक संस्कृति और भारतीय महापुरुषों को मिटाने का जो काम वह कभी नहीं कर पाए वामन जैसे लोग पेरियार की कलुषित विचारधारा को आगे बढ़ाकर चंदे के लालच में उनके पालतू बनकर कर रहे है। अगर बाबा रामदेव जी इन्हें वैचारिक आंतकी न कहें तो क्या कहें?

– ***सम्पादक***

शोक समाचार

डॉ. अभयदेव शर्मा जी का निधन

वेद संस्थान सी-22, राजौरी गार्डन के अध्यक्ष, वेदों के विद्वान, लेखक, व्याख्याता एवं प्रवक्ता डॉ. अभयदेव शर्मा जी का 18 नवम्बर, 2019 को 86 वर्ष की आयु में अकस्मात निधन हो गया। वे आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान संन्यासी स्वामी विद्यानन्द विदेह जी के सुपुत्र थे, जिन्होंने वेद संस्थान की स्थापना की। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं प्रार्थना सभा 20 नवम्बर को वेद संस्थान में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ निकटवर्ती अनेक आर्य संस्थानों के अधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

आचार्य धूमकेतु शास्त्री जी का निधन

आर्यसमाज त्रिनगर, नई दिल्ली में पुस्तकाध्यक्ष के रूप में सेवा प्रदान करने वाले, वैदिक विद्वान, गुरूकुल के स्नातक, आचार्य धूमकेतु शास्त्री जी का 13 नवम्बर, 2019 को अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से त्रिनगर शमशान घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं प्रार्थना सभा 16 नवम्बर को आर्यसमाज त्रिनगर में सम्पन्न हुई, जिसमें निकटवर्ती अनेक आर्य संस्थानों के अधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

आर्य समाजों द्वारा आयोजित वार्षिक उत्सव संपन्न

विश्व व्यापी आर्य समाज के परिप्रेक्ष्य में भारत की राजधानी दिल्ली में स्थित आर्य समाजों का अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। दिल्ली में सैकड़ों आर्य समाजें हैं। जहां प्रतिदिन दैनिक गतिविधियों के साथ-साथ समय-समय पर मानव सेवा, राष्ट्र सेवा, शिक्षा सेवा, चिकित्सा सेवा इत्यादि के कार्य भी किए जाते हैं और इन विषयों पर निरंतर कार्यक्रम भी आयोजित होते रहते है। इसी क्रम में लगभग प्रत्येक आर्य समाज अपनी आर्य समाज के वार्षिक उत्सवों का धूमधाम से आयोजन करते हैं। यहां प्रस्तुत है दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजों के वार्षिक उत्सवों के संक्षिप्त समाचार-

आर्यसमाज आनन्द विहार, एल ब्लाक हरि नगर, नई दिल्ली

आर्य समाज एल. ब्लॉक आनंद विहार, हरि नगर द्वारा 6 से 10 नवंबर 2019 तक 44वें वार्षिक उत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विशेष यज्ञ एवं वेद कथा का आयोजन किया गया। आचार्य नरेन्द्र मैत्रेय जी ने अपने वैदिक प्रवचनों में शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के सूत्र प्रदान करते हुए मानव मात्र को वैदिक धर्म के अनुसार जीवन जीने का संदेश दिया। इस अवसर पर श्रीमती कल्याणी जी के मधुर भजनों से उपस्थित जन लाभान्वित हुए। आर्य समाज की ओर से 10 नवम्बर को समापन अवसर पर सभी विद्वानों और उपस्थित नर-नारियों का धन्यवाद किया गया। - ***महेंद्र सिंह, मन्त्री***

आर्यसमाज साकेत, नई दिल्ली

आर्य समाज साकेत नई दिल्ली द्वारा 15 से 17 नवम्बर 2019 तक 40वें वार्षिक उत्सव का आयोजन किया गया। जिसमें चतुर्वेद शतकम महायज्ञ के ब्रह्मा आचार्य वीरेन्द्र कुमार जी ने यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बहुत ही सरल भाषा में यजमानों को आशीर्वचन प्रदान किए, वैदिक प्रवचनों में आचार्य छवि कृष्ण शास्त्री जी ने वेद मंत्रों को आधार बनाकर जीवन जीने की कला सिखाई और भजनों में श्री धीरज कांत जी द्वारा ईश्वर भक्ति, ऋषि भक्ति के मधुर संदेश प्राप्त कर आर्यजन भावविभोर हो गए। - ***मंजीत शास्त्री, मंत्री***

आर्यसमाज अशोक विहार-2, दिल्ली

आर्य समाज मंदिर बी/2, अशोक विहार, द्वारा 14 से 17 नवम्बर 2019 तक 40वां वार्षिक उत्सव मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा पंडित काशीराम शास्त्री जी एवं डॉ. जयेन्द्र आचार्य जी ने प्रतिदिन यज्ञ में वेदमंत्रों और यज्ञ की विधियों का सारगर्भित संदेश देते हुए यजमानों को आशीर्वचन प्रदान किए। साथ ही भजनों में श्री त्रिशपाल विमल जी ने अपने मधुर भजनों से उपस्थित जनसमूह को राष्ट्रभक्ति, ईश्वर भक्ति तथा महर्षि दयानंद के उपकारों की याद दिलाई। डॉ. जयेन्द्र आचार्य जी के प्रवचनों को सुनकर सभी उपस्थित महानुभाव लाभान्वित हुए। 17 नवम्बर को यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ-साथ समापन समारोह में क्षेत्र के गणमान्य अतिथिगण और आर्य नेता उपस्थित रहें। -***राकेश बेदी, मन्त्री***

आर्ष योग संस्थान सै. 76, फरीदाबाद

आर्ष योग संस्थान सैक्टर-76, फरीदाबाद-हरियाणा द्वारा 14वें वार्षिक उत्सव का आयोजन किया गया। जिसमें अथर्ववेद पारायण यज्ञ में गुरुकुल मंझावली के ब्रह्मचारियों ने वेदपाठ किया, यज्ञ ब्रह्मा क निर्देशन में यजमानों ने आहुति देकर पुण्य अर्जित किया। साथ ही प्रतिदिन भजन और प्रवचनों के कार्यक्रम आयोजित किए गए। समापन समारोह में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी सहित कई गणमान्य अतिथि और आर्य विद्वान उपस्थित रहें। इस अवसर पर गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के ब्रह्मचारियों तथा आर्य वीर-वीरांगनाओं द्वारा योगासन और धनुरविद्या का प्रदर्शन किया गया। - ***मन्त्री***

अखिल भारतीय गुरुकुल महोत्सव, पौंधा

गुरुकुल पौंधा, देहरादून उत्तराखंड के प्रांगण में श्रीमद् दयानंद वैदिक गुरुकुल परिषद द्वारा 3 दिवसीय गुरुकुल महोत्सव 2019 का आयोजन किया गया जिसमें स्वामी प्रणावानंद जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए और 54 गुरुकुलों के 450 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। इस प्रेरक आयोजन में आर्य संन्यासी, विद्वान और महर्षि दयानंद के अनुयायी सभी ने गुरुकुल परंपरा की प्रशंसा की और सभी विद्यार्थियों को आशीर्वाद दिया।

ऋषि निर्वाणोत्सव संपन्न

17 नवम्बर 2019, आर्य समाज लाजपत नगर नई दिल्ली। दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल द्वारा आर्य समाज लाजपत नगर में महर्षि दयानंद सरस्वती के 136वें निर्वाण उत्सव का आयोजन किया गया। यज्ञ के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ और इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री योगेश मुंजाल जी ने ऋषि दयानंद के शिक्षाओं और उपकारों को याद करते हुए ऋषिवर को भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी। साथ ही मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. धर्मेंद्र शास्त्री और आचार्य विद्याप्रसाद मिश्र ने आर्यजनों को सारगर्भित और प्रेरणाप्रद उद्बोधन दिए। श्रीमती सुदेश आर्या जी के भजन संगीत से भावविभोर हो गए। श्री विनय आर्य जी, महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य समाज द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों का संक्षिप्त वर्णन करते हुए दिल्ली सभा की आगामी योजनाओं से उपस्थित जनसमूह को अवगत कराया। इस अवसर पर दक्षिण दिल्ली की 27 आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्त्ता और सदस्य उपस्थित थे। - ***राकेश भटनागर, महामंत्री***

आर्यसमाज ए.जी.सी.आर. में आध्यात्मिक प्रवचन एवं शंका समाधान

आर्य समाज ए.जी.सी.आर एन्कलेव द्वारा स्वामी विवेकानंद परिव्राजक जी के सानिध्य में 2 से 4 दिसम्बर 2019 तक यज्ञ, भजन, प्रवचनों का कार्यक्रम आयोजित किया गया है। जिसमें 3 और 4 दिसम्बर को सायं 7:30 बजे से 9:30 बजे तक विशेष रूप से भजन, प्रवचनों के साथ शंका समाधान का कार्यक्रम निश्चित है। आप सभी इष्ट परिवार सहित सादर आमंत्रित हैं। - ***आर्य ओमप्रकाश भटनागर, मन्त्री***

आर्य समाज दिलशाद गार्डन का
27वां वार्षिक उत्सव

आर्य समाज दिलशाद गार्डन द्वारा 21 से 24 नवम्बर 2019 तक 27वां वार्षिक उत्सव मनाया जा रहा है जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा एवं प्रवचनकर्ता यशपाल शास्त्री जी, भजन आचार्या अमृता शास्त्री जी एवं आशीर्वाद तपस्वी सुखदेव जी का होगा। 21 नवम्बर को आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन होगा तथा 24 नवम्बर को पूर्णाहुति एवं समापन समारोह में श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री विनय आर्य जी, श्री सतीश चड्डा जी, श्री अशोक गुप्ता जी इत्यादि महानुभावों का मार्गदर्शन भी प्राप्त होगा।

- ***श्रीमती सरोज पुरंग, मन्त्री***

आर्य समाज अमर कालोनी का
52वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज अमर कालोनी नई दिल्ली का 52वां वार्षिकोत्सव समारोह 13 से 15 दिसम्बर, 2019 तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर स्वामी विष्वंग जी के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ एवं श्री भानुपकाश शास्त्री जी के भजन होंगे। महिला सम्मेलन 14 दिसम्बर को 12:30 बजे से एवं समापन 15 दिसम्बर को प्रात: 8 से 1:30 बजे तक आयोजित होगा। - ***ओम प्रकाश छाबड़ा, मन्त्री***

आर्य समाज मालवीय नगर का
68वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज मालवीय नगर नई दिल्ली का 68वां वार्षिकोत्सव समारोह 21 से 24 नवम्बर, 2019 तक आयोजित किया जा रहा है। समापन समारोह के अवसर पर आर्य सम्मेलन प्रात: 10:30 से 1 बजे तक श्री ओमप्रकाश यजुर्वेदी जी की अध्यक्षता में होगा। मुख्य वक्ता आचार्य वीरेन्द्र कुमार जी, डॉ. सारस्तव मोहन मनीषी एवं भजन श्री भानुपकाश शास्त्री जी के भजन होंगे।- ***प्रमोद पाठक, मन्त्री***

वार्षिकोत्सव का आयोजन

आर्य समाज मंदिर गुरू विरजानन्द मार्ग, सैनिक विहार, दिल्ली-110034 द्वारा 21 नवम्बर से 24 नवम्बर 2019 तक वार्षिक उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य ऋषभ देव जी तथा गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियों द्वारा वेद पाठ किया जाएगा। भक्ति संगीत श्री गौरव आर्य जी प्रस्तुत करेंगे और प्रवचन भी आचार्य श्री ऋषभ देव जी के ही होंगे। पूर्ण आहुति एवं समापन समारोह 24 नवम्बर को आयोजित किया जाएगा जिसमें स्वामी प्रणावानंद जी, श्री सतेंद्र जैन जी, मंत्री दिल्ली सरकार, श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री विनय आर्य जी, श्री सुरेंद्र आर्य जी, श्री धर्मपाल गुप्ता जी, श्री जोगेंद्र खट्टर जी के विशेष उद्बोधन होंगे। - ***विनय खुराना, मन्त्री***

22वां वार्षिक उत्सव

आर्य समाज सुशांत लोक-1, डी ब्लॉक गुरुग्राम द्वारा 29 नवम्बर से 1 दिसम्बर तक 22वें वार्षिक उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें यज्ञ ब्रह्मा आचार्या नंदिता शास्त्री जी, मुख्य अतिथि श्रीमती वीना आर्या जी, विशिष्ठ अतिथि श्रीमती अनीता जी के साथ-साथ डॉ. वेदपाल जी, डॉ. सोमदेव शास्त्री जी के प्रवचन होंगे। 30 नवम्बर और 1 दिसम्बर को यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. वेदपाल जी होंगे तथा गुरुकुल ततारपुर के ब्रह्मचारियों द्वारा वेदपाठ किया जाएगा। इस अवसर पर श्री प्रकाश आर्य जी मंत्री सार्वदेशिक सभा मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित होंगे।

वेद प्रचार सप्ताह एवं अथर्ववेद पारायण महायज्ञ

आर्य समाज पटियाला पंजाब द्वारा 18 से 24 नवम्बर 2019 तक वेद प्रचार सप्ताह एवं अथर्ववेद पारायण महायज्ञ स्वामी सच्चिदानंद सरस्वती जी के ब्रह्मत्व में होगा।भजनोपदेशक पंडित उपेंद्र एवं मुख्य अतिथि के रूप में सुश्री परमीत कौर लोक सभा सदस्य का उद्बोधन होगा।

- ***बिजेन्द्र शास्त्री, मंत्री***

आवश्यकता है

आर्य अनाथालय व उससे सम्बन्धित संस्थाओं के निराश्रित/अनाथ बालक/बालिकाओं के आश्रम के लिए पुरुष व महिला संरक्षक (वार्डन), सेना से सेवानिवृत प्रशासनिक अधिकारी, पुरुष नर्स, सभागार प्रबन्धक व बिजली कर्मचारी की आवश्यकता है, जिसे सेवा कार्य में रूचि हो। उम्र 40 से 60 के बीच। नशे से मुक्त, शाकाहारी व संस्था के भवन में रहना अनिवार्य। भोजन व निवास के अतिरिक्त वेतन योग्यतानुसार। 10-12-2019 तक आवेदन भेजें।

सचिव, आर्य अनाथालय,
4844/24 अंसारी रोड, दरिया गंज,
नई दिल्ली-110002

आर्यसन्देश साप्ताहिक में बाल आर्य प्रतिभा विकास स्तम्भ

आर्यसन्देश साप्ताहिक के आगामी अंकों में 'बाल आर्य प्रतिभा विकास' का एक नियमित स्तम्भ आरम्भ किया जाएगा। इस स्तम्भ में आर्य परिवारों के सभी होनहार बच्चों को सादर आमन्त्रण है कि वे अपनी विशेष योग्यतानुसार स्वरचित कविता, भजन, महापुरुषों के चित्रों की पेंटिंग, शिक्षा या खेल के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि अथवा किसी भी प्रतियोगिता में सफलता प्राप्ति का प्रमाण सहित समाचार बच्चे के फोटो के साथ हमें भेजें। उसे उचित स्थान पर क्रमश: प्रकाशित किया जाएगा।

- **सम्पादक**

सोमवार 18 नवम्बर, 2019 से रविवार 24 नवम्बर, 2019
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 21-22 नवम्बर, 2019
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 20 नवम्बर, 2019

अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु ओ३म् हमारे वीर विजयी हों।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य वीर दल हरियाणा
के तत्वाधान में
विशाल आर्य वीर महासम्मेलन

दिनांकः-
30 नवम्बर व 1 दिसम्बर
(शनिवार-रविवार) 2019

स्थानः- आर.के.एस.डी. कॉलेज, कैथल

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के अध्यक्ष
डॉ0 स्वामी देवव्रत सरस्वती जी
की अध्यक्षता में समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है।

स्वामी देवव्रत सरस्वती
(अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य वीर दल ट्रस्ट)

इस कार्यक्रम में आप सभी सादर आमन्त्रित हैं। कृपया सम्मेलन में पधार कर संगठन का परिचय दें।

-: निवेदक :-

उमेद सर्ना संचालक | वेदप्रकाश आर्य महामन्त्री | करणसिंह आर्य कोषाध्यक्ष | जगदीश चन्द्र आर्य मण्डलपति | धर्मवीर आर्य मन्त्री | पवन कुमार आर्य संयोजक | सत्यदेव चौधरी स्वागताध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरियाणा
सम्पर्क सूत्रः- 94675-56404, 94662-92625, 72064-76398

प्रतिष्ठा में,

ओ३म्
thearyasamaj.org

दो करोड़
से अधिक लोगों ने अब तक देखा
आर्यसमाज YouTube चैनल

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और
अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।
यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना
चाहते हैं तो घंटी का बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।
आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

अब कौन दयानन्द आएगा, जो वेद का पाठ पढ़ाएगा!

है मुल्ला का शोर यहां,
पादरी बने हैं चोर यहां!
कुछ पाखंडी, तांत्रिक बने,
जो जनता को लूट रहे हैं!
भ्रमित करते जनता को,
ग्रहों का दोष बताते हैं!
आर्यों के पुत्र अब पीरो,
मजारों पर जाते हैं!
अब कौन दयानन्द आएगा,
जो वेद का पाठ पढाएगा!

भूल गये इतिहास ये अपना,
औरंगजेब ने जनेऊ तुलवाऐ!
युद्ध जीतने की खातिर,
जयचंद ने मुगल बुलाये!
अब कौन शिवाजी आएगा,
जो मुगलों से भिड़ जाएगा!
अब कौन दयानन्द आएगा,
जो वेद का पाठ पढाएगा!

वेद ज्ञान को भूल गये ये,
गुरु घंटालों की शिक्षा माने!
गुरु विरजानंद को भूल गये ये,
ठगों को ही अब गुरु माने!
जो विश्व गुरु रहा कभी,
आज वो राष्ट्र क्यूं उजड़ गया!
धर्म भूल कर स्वार्थ में,
जब से मनुष्य पड़ गया!
अब कौन दयानन्द आएगा,
जो वेद का पाठ पढाएगा!

हमें राष्ट्र को फिर से वहां पहुंचाना है,
फिर इसे विश्वगुरु सम्मान दिलाना है!
फिर पैदा होंगे इस धरती पर,
विरजानंद जैसे गुरु!
माताओं के गर्भों से दयानन्द से पुत्र होंगे
हनुमान से ब्रह्मचारी और
शिव जैसे योगी होंगे,
वो वैदिक युग फिर से आएगा,
जो ऋषि दयानन्द ने बताया है!
पाखंड छोड़ जब जनता ने,
यदि वैदिक धर्म को अपनाया!

- कोमल आर्या

जानिये एम डी एच देगी मिर्च की
शुद्धता, गुणवत्ता और उत्तमता की
सच्चाई

यह मिर्च कर्नाटक में पैदा होती हैं। वहां पर लगभग 1000 औरतें पूरा दिन सिर्फ मिर्च की डंडी उतारने के काम में लगी रहती हैं। उसी मिर्च से देगी मिर्च तैयार होती है।

क्या आप लकड़ी (डंडी) मिला मिर्च मसाला खाना चाहते हैं या बिना लकड़ी (डंडी) वाला मिर्च मसाला ?
लकड़ी (डंडी) बिना मिर्च मसाला शुद्धता और स्वाद के गुणों से भरपूर होता है। मसाला लगता भी कम है और स्वाद भी भरपूर आता है। क्योंकि बिना लकड़ी (डंडी) के मिर्च की शुद्धता 20% से भी ज्यादा और बढ़ जाती है। जबकि लकड़ी (डंडी) मिला मिर्च मसाला लगता भी ज्यादा है और स्वाद भी नहीं आता है और तो और यह सेहत के लिये भी नुकसान दायक होता है।
आप खुद ही फैसला कीजिये कि आप कैसा मिर्च मसाला खाना पसंद करेंगे क्योंकि सवाल सिर्फ शुद्धता और स्वाद का ही नहीं आप की सेहत का भी है।

MDH मसाले सेहत के रखवाले असली मसाले सच -सच

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 फोन नं० 011-41425106-07-08
E-mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com
ESTD. 1919

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह